ISSN2393-8838

Date of Publishing 19th April Vol. No.30 Issue No.4

APRIL 2019

Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

हर मुसलमान के लिये रमज़ान का रोज़ा अल्लाह की खुशी, उसकी समीपता प्राप्त करने, अल्लाह की सृष्टि से वास्तविक हमदर्दी, जिस्म व जान और ईमान के स्वस्थ्य रहने के साथ आख़िरत की कामयाबी का ज़ामिन है अतः इस महान नेमत की क़द्र करें।

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

अध्यक्ष, मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

1

(प्रेस रिलीज़)

न्यूज़ी लैण्ड की मस्जिदों में नमाज़ियों पर हमला निन्दनीय

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली-१७ मार्च २०१९

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने न्यूज़ीलैण्ड की दो मस्जिदों में अंधाधुंध फायरिंग और आतंकी हमला जिसमें ४९ लोग जां बहक़ हो गए, की सख्त शब्दों में निन्दा की है और इसे मानवता के खिलाफ कायरतापूर्ण, वहशियाना, मानवता विरोधी और अत्यंत अफसोसनाक कार्रवाई क़रार दिया है। उन्होंने कहा कि आतंकवाद कहीं भी हो और किसी भी बुनियाद पर अंजाम दिया जाए वह हर हाल में निन्दनीय है लेकिन पूजास्थल जहां दुनिया के स्वामी की इबादत की जाती है, मानवता की सफलता एवं कल्याण के लिये दुआएं की जाती हैं और वहां मानवता का पाठ दिया जाता है वह भी रंग व नस्ल के भेद भाव और आतंकवाद से सुरक्षित नहीं रह गई हैं जो हर मसलक व मज़हब और कौम व नस्ल और पूरी मानवता के लिये एक दुखद और चिंता का क्षण है। इस प्रकार की हरकतों की कोई भी धर्म और समाज इजाज़त नहीं दे सकता अतः इन इन्सानियत दुश्मन दुर्भाग्यपूर्ण कार्रवाइयों की जितनी भी निन्दा की जाए कम है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता और इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करना दुर्भाग्यपूर्ण कर्म है।

सम्माननीय अमीर ने अपने अखबारी बयान में विश्व-समुदाय से मांग की है कि वह इन मानवता विरोधी, कायरतापूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण हरकतों की रोकथाम के लिये प्रभावी पालीसी बनायें और किसी खारिजी अम्र से प्रभावित हुए बगैर ईमानदाराना सोच के तहत धर्म, रंग व नस्ल के भेद भाव के बगैर आतंकवाद के दानव का सर कुचलने का प्रबन्ध करे ताकि इन्सानियत रोजमर्रा की रूहफर्सा (ताबाहकुन) मुसीबत से छुटकारा पा सके और विश्व स्तर पर शान्तिपूर्ण नागरिकों के जान व माल सुरक्षित रह सकें। जमीअत के अमीर ने अपनी प्रेस रिलीज़ में निर्दोष जानों के जाने पर सख्त रंज व गम व्यक्त किया और उनके लिये शहादत के दर्जे पर फायज़ होने की दुआ की और जाँ बहक़ होने वालों के परिवार वालों से शोक और प्रभावितों से सौहार्द एवं हमदर्दी व्यक्त किया है और शांत रहने और किसी भी तरह के बेजा जोश का शिकार न होने की अवाम व ख़वास से अपील की है।

(जरीदा तर्जुमान-१-१५ अप्रैल २०१९)

इसलाहे समाज
अप्रैल 2019 2

मासिक
इसलाहे समाज
अप्रैल 2019 वर्ष 30 अंक 4
शअ्बानुल मुअज़्ज़म 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एह़सानुल् ह़क़्क़

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. प्रेस रिलीज़ (न्यूज़ीलैन्ड धमाके की निन्दा) 2
2. रमज़ान का महीना 4
3. रमज़ान के महीने में किये जाने वाले सत्कर्म 6
4. दुनिया में इन्सान को क्या करना है? 8
5. शादी को आसान बनाएं 10
6. प्रेस रिलीज़ (कार्य समिति) 12
7. रमज़ान के रोज़ों और इबादत की ... 15
8. माल के बारे में इस्लाम का दृष्टिकोण 17
9. नौजवानों का संरक्षण सबकी ज़िम्मेदारी 18
10. जमाअती खबर 19
11. अल्लाह की राह में खर्च करने का लाभ 20
12. ऐलाने दाखिला 21
13. इस्लाम में नारी शिक्षा का महत्व 22
14. पूरी मानवता की भलाई 24
15. पाप के बुरे प्रभाव 26
16. अन्तर्राष्ट्रीय अम्न शान्ति के तक़ाज़े 27
17. रमज़ान के मौका पर तआवुन की अपील 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

रमज़ान का महीना

इस्लाम की बुनियाद जिन पांच चीजों पर है उनमें से एक रमज़ान के महीने का रोजा रखना भी है। यह साल में पूरे एक महीने का रोजा है जिस में इबादतों का सवाब कई गुना बढ़ा दिया जाता है। रमज़ान का रोज़ा पिछली उम्मतों पर भी फर्ज किया गया था जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

ऐ मुसलमानों तुम पर रोज़ा फर्ज़ हुआ है जैसा कि तुम से पहले लोगों पर फर्ज़ हुआ था ताकि तुम बच जाओ। घबराओ नहीं चन्द ही दिन हैं फिर जो कोई तुम में से बीमार हो (जिससे रोज़ा न रखा जा सके या) मुसाफिर हो तो और दिनों में शुमार (गिन्ती) पूरी करो। और जो लोग उस (रोज़ा) की क्षमता रखते हैं उन पर एक फक़ीर को खाना देना वाजिब है। फिर जो कोई शौक़ से नेकी करे तो वह उस के लिये बेहतर है और सबसे बेहतर तो यही है कि रोज़ा रखो (चाहे तकलीफ हो) अगर जानते हो (यह दिन क्या हैं सुनो) रमज़ान का महीना ही तो वह महीना है जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ है जो सब लोगों के लिये हिदायत और हिदायत की स्पष्ट निशानियां और फैसल है, पस जो कोई तुम में से उस महीने को पाये वह उसके रोज़े रखे। और जो कोई बीमार या मुसाफिर हो वह और दिनों में शुमार (गिन्ती) पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिये सरलता चाहता है और तंगी नहीं चाहता ताकि तुम गिंती पूरी कर सको और बताए हुए रास्ते पर अल्लाह की बड़ाई करो ताकि तुम शुक्र करो। (सूरे बकरा १८३-१८६)

कुरआन की इन आयतों में रोज़ा रखने के मकसद को भी स्पष्ट कर दिया गया है, इस में अमीर गरीब के बीच अन्तर नही है जो मालदार है वह भी रोज़ा रखेगा और जो गरीब है वह भी रोज़ा रखेगा। समता का मकसद यह है कि रोज़ा मालदार इन्सान को यह एहसास दिलाता है कि भूख क्या होती है और जो भूखे होते हैं तो उन पर क्या गुजरती है। इससे मालदारों के अन्दर गरीबों मोहताजों की मदद करने की भावना पैदा होती है।

इस्लाम ने किसी के अच्छे और बुरे होने का पैमाना तकवा को करार दिया है तकवा का मतलब यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दों को जो कुछ करने का आदेश दिया है उस पर बिला झिझक अमल करे और जिन चीज़ों और कामों से मना किया है उससे दूर रहे और दूसरों को भी नेकी की नसीहत करे और बुरी चीज़ों से दूर रहने का उपदेश दे।

रोज़ा हम तमाम इन्सानों को बुराइयों से रोकने की क्षमता देता है इसी लिये हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया कि रोज़ा ढ़ाल है।

जिस तरह ढाल इन्सान को वार से बचाता है इसी तरह से रोज़ा भी इसान को हर तरह की बुराई से बचाता है इस लिये रमजान के महीने के रोज़े को बहुत ग़नीमत समझना चाहिए। वक़्त बहुत क़ीमती है अल्लाह ने हमें इस महीने में इबादत करने और बुराइयों से दूर रहने का अवसर प्रदान किया है इसको हमें नेकी

कमाने में लगाना चाहिए और अपने वक़्त को फुजूल के कामों से दूर रख कर इस बाबर्कत महीने को नेकी कमाने का माध्यम बनाना चाहिए।

रोज़े की फज़ीलत यह है कि जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखते हुए सवाब हासिल करने की निय्यत से रोज़ा रखे गा तो उसके पिछले गुनाह मआफ हो जाऐंगे और जो शख्स अल्लाह तआला पर ईमान रखते हुए सवाब के लिये रमज़ान की रातों में इबादत करेगा तो उसके पिछले गुनाह मआफ हो जाएंगे, इसी तरह से जो लैलतुल कद्र को ईमान और सवाब की उम्मीद रखते हुए इबादत करे गा तो उसके पिछले गुनाह मआफ कर दिये जाएंगे। (सुनन तिर्मिज़ी ३/६७)

अल्लामा उसैमीन, अल्लामा इब्ने बाज़, इब्ने जिबरीन रहमतुल्लाही अलैहिम रोज़े के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि ''रोज़े के समाजी फायदे भी हैं, लोग तसव्वुर करते है कि हम रोज़ेदार मुसलमान एक उम्मत हैं, एक वक़्त में खाना खाते हैं, एक वक़्त में रोज़ा खोलते हैं, मालदार अल्लाह की नेमतों की कद्र करते हैं, गरीबों और ज़रूरत मन्दों पर दिल खोल कर खर्च करते हैं, और शैतान के स्थानों से दूर रहते हैं, रोज़े से अल्लाह का तक़्वा हासिल होता है और यह तक़्वा (संयम, परहेज़गारी, नेकी) समाज में एक दूसरे से संबन्ध को मज़बूत करती है।

रोज़ेदारों को चाहिए कि ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की फरमाबरदारी (आज्ञापालन) करें, अल्लाह ने जिन चीज़ों से मना किया उसके क़रीब न जाएं, वक़्त पर पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ें। झूठ, दूसरों की बुराई, धोका धड़ी, सूदी लेन देन और हराम कामों को छोड़ दें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स झूठ बोलने, उस पर अमल करने और जिहालत की बातों को न छोड़े तो अल्लाह तआला को इस बात की ज़रूरत नहीं है कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे।

रमज़ान और रमज़ान के अलावा दिनों में नमाज़ से सुस्ती करने वाले यह जान लें कि नमाज़ कल-म-ए-शहादत अर्थात एक अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने के बाद इस्लाम का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। इन्सान रोज़े की हालत में जब अपने आप को विभिन्न इबादतों का आदी बनाए गा तो दूसरे दिनों में इन इबादतों का करना आसान हो जाएगा। इसके विपरीत अगर सुस्ती, काहिली और आराम का आदी बनेगा तो रोज़े की हालत में इबादत करना मुश्किल हो जाए गा। इसलिये मैं ऐसे लोगों को नसीहत करूंगा कि रोज़े के कीमती अवक़ात सोने में न गुज़ारें बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करें। अल्लाह तआला ने इस ज़माने में रोज़ा रखना आसान कर दिया है''।

कितना खुश नसीब है वह इन्सान जो वक़्त और इबादत की अहमियत को समझते हुए अल्लाह की इबादत करता है और कितना बदनासीब है वह इन्सान जो जानते हुए भी रमजान जैसे बाबर्कत महीने की नेमतों से महरूम रहता है। अल्लाह तआला हम तमाम लोगों को इस बाबर्कत महीने में अल्लाह की ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करने और रमज़ान के मुबारक मौके पर मानव सेवा करने की क्षमता दे।

रमज़ान के महीने में किये जाने वाले सत्कर्म

डा० अमानुल्लाह

रमज़ान का महीना भलाई और बरकत के एतबार से तमाम महीनों में श्रेष्ठतम महीना है इस मुबारक महीने में हमें ज़्यादा से ज़्यादा सत्कर्मों से अपनी झोली भर लेनी चाहिये। इस लेख में उन आमाल का वर्णन किया जा रहा है जिन्हें रमज़ान के महीने में पाबन्दी के साथ करना चाहिये।

१. रमज़ान का रोज़ा हर अकलमन्द बालिग मर्द और औरत पर फर्ज है रोज़े की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है रोज़े का बदला अल्लाह स्वयं देगा। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया हदीस का अर्थ है कि चूंकि रोजेदार केवल अल्लाह के लिये खाना पीना छोड़ता है इसलिये अल्लाह तआला उसे बिना किसी वास्ते के स्वयं रोज़े का बदला देगा। (बुखारी ७४९२)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया जो शख्स ईमान और सवाब की नियत से रोज़ा रखे गा अल्लाह उसके तमाम गुनाहों को मआफ कर देगा। (सहीह बुखारी-३८)

२. क्यामुल्लैल (तरावीह) का एहतमाम करनाः क्यामुल्लैल अल्लाह के यहां बहुत ही प्रिय इबादत है पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० क्यामुल्लैल का काफी एहतमाम करते थे। रसूलुल्लाह स०अ०व० के ज्यादा देर तक खड़े रहने की वजह से आपके पैर में सूजन आ जाती थी।

रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ अदा करने से ज़्यादा पुण्य मिलता है बल्कि प्रतिष्ठित ओलमा तरावही की नमाज़ को जमाअत के साथ अदा करने को ही श्रेष्ठ करार देते हैं लेकिन अकेले अदा करने में कोई हर्ज नहीं है।

३. सदका खैरात करनाः सदका खैरात करना एक श्रेष्ठ इबादत है इसका बड़ा सवाब और अत्यधिक लाभ है लेकिन रमज़ान के महीने में सदका खैरात ज्यादा से ज्यादा करना चाहिये। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० भलाई के मामले में काफी दानवीर थे जब कि रमज़ान के महीने में तेज तुन्द हवाओं की तरह अल्लाह के रास्ते में दान व खैरात करते थे (सहीह मुस्लिम २३०८)

४. कुरआन की तिलावत करनाः इस्लाम ने कुरआन की तिलावत पर काफी जोर दिया है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० रमज़ान के महीने में कुरआन की तिलावत का काफी एहतमाम करते थे। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आप स०अ०व० को हर रमज़ान में पूरा कुरआन पढ़ाया करते थे और उस रमज़ान में जिस रमज़ान के बाद आप पर कोई रमज़ान नहीं आया जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आप को दोबार कुरआन पढ़ाया। सहीह बुखारी की हदीस न० ३२२० से मालूम होता है कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह को रमज़ान के महीने रसूलुल्लाह स०अ०व० रमज़ान के आखिरी दस दिनों में पाबन्दी के साथ एतकाफ करते थे अतः रमज़ान के अंतिम दस दिन के एतकाफ की पाबन्दी करनी चाहिये एतकाफ मस्जिद में करनी चाहिये। मस्जिद के अलावा

जगह में एतकाफ का सुबूत नहीं मिलता। एतकाफ किसी भी मस्जिद में कर सकते हैं। एतकाफ के लिये जामा मस्जिद की शर्त लगाना सहीह नहीं है लेकिन सबसे बेहतर एतकाफ मस्जिद हराम, मस्जिद नबवी और मस्जिदे अकसा है फिर जामा मस्जिदों में, फिर किसी भी मस्जिद में। इस मामले में मर्द और औरत सब बराबर हैं क्योंकि अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के ज़माने और आप के बाद भी औरतें मस्जिद ही में एतकाफ करती थीं।

एतकाफ़ के लिये मस्जिद के किसी हिस्से को लाज़िम पकड़ना ज़रूरी नहीं है बल्कि पूरी मस्जिद में एतकाफ के दौरान कहीं भी आ जा सकते हैं। मस्जिद के अन्दर आयोजित होने वाले तमाम दीनी प्रोग्राम में शिर्कत की जा सकती है। एतकाफ के दर्मियान ज़रूरत की वजह से एतकाफ तोड़ा जा सकता है और इसका कोई कफ्फारा (प्रायश्चित) नहीं है। ईद का चांद निकलते ही एतकाफ से निकल सकते हैं।

६. लैलतुल क़द्र की तलाश रमज़ान का आख़िरी दस दिन अत्यंत खैर व बर्कत वाला है इसी आखिरी दस दिनों में एक रात है जिसे लैलतुल कद्र कहते हैं जो मुबारक रात है और हज़ार महीनों से बेहतर है।

इन दस दिनों की रातों में जिक्र व अज़कार, तसबीह तहलील और तिलावत का ज्यादा से ज्यादा एहतमाम करना चाहिये। रसूलुल्लाह इन में खुद रात को जागते और अपने परिवार वालों को भी जगाते। (सहीह बुखारी २०२४)

लैलतुल क़द्र की तलाश की फ़ज़ीलत बयान करते हुये हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया जो शख्स लैलतुल कद्र का क्याम करेगा उसके पिछले तमाम गुनाह मआफ कर दिये जाते हैं। (सहीह बुखारी १६०१)

शबे कद्र को पाने या उसका सवाब हासिल करने के लिये अच्छा यह है कि रमज़ान महीने की आख़िरी रोज़ों की तमाम रातों का क्याम किया जाये खास तौर से ताक रातें (२१,२३,२५,२७,२६) को इबादत में गुज़ारी जायें।

७. रमज़ान के महीने में उमरा करने का सवाब हज करने के बरबार है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० ने एक अंसारी औरत से फरमायाः रमजान में उमरा कर लेना क्योंकि रमज़ान में उमरा अदा करने का सवाब हज के बराबर है।

८. दुआ और जिक्र व अज़कार पाबन्दी से करना चाहिये क्योंकि यह कर्म अल्लाह को बहुत ज़्यादा पसन्द हैं क्योंकि जिक्र व अज़कार तसबीह तहलील और दुआओं के जरिये हम जहन्नम से बच सकते हैं और जन्नत के हकदार बन सकते हैं। अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने फ़रमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिसने रमज़ान का महीना पा लेने के बाद भी अपना क्षमादान नहीं करवा पाया। (सुनन तिर्मिज़ी ३५४५)

६. तौबा और माफी तलब करनाः तौबा और इस्तेगफार से अल्लाह तआला तमाम गुनाहों को मआफ़ करते हुये गुनाहों को नेकियों में बदल देता है।

अल्लाह तआला हम तमाम लोगों को हमेशा सत्कर्म करने की क्षमता दे खास तौर से रमज़ान के महीने में ज्यादा से ज्यादा नेक काम करने की क्षमता दे।

दुनिया में इन्सान को क्या करना है?

नियाज़ अहमद मदनी तैयबपूरी

इस दुनिया में पैदा किए जाने के बाद हम किधर बढ़ रहे हैं और कहां का सफर कर रहे हैं?

यह दुनिया किधर जा रही है?

जीवन की आयु के पृष्ठों के पलटने के पश्चात क्या होगा?

इस संसार में मैं क्यों पैदा किया गया हूं?

क्या इसमें हमारा कोई खास काम है? कोई उद्देश है? वह क्या है? वह काम क्या है?

भौतिक वादियों के यहाँ यह प्रश्न बड़ा पेचीदा और जटिल है, क्योंकि यह केवल उन्हीं चीज़ों को मानते हैं और उस पर विश्वास रखते हैं जिन को देखते या महसूस करते हैं।

यह लोग प्रकृति की आवाज़ को अपने सीने में दबा देते हैं और बुद्धि की भाषा से चैलेंज करते हैं, यह लोग आश्चर्यजनक रूप से अन्धेपन में इस बात पर अड़े हुए हैं कि संसार और इसकी सारी चीज़ें अपने आप पैदा हो गई हैं यह

मैं क्यों पैदा किया गया?

इस दुनिया में हमें क्या करना है?

हमारे इस जीवन का उद्देश्य क्या है?

यह ऐसे प्रश्न हैं कि हर इंसान पर अनिवार्य है कि वह अपने आप से इसके बारे में पूछे तथा इसके बारे में ग़ौर करे।

हर प्रकार का अज्ञान इसका परिणाम चाहे जितना भयानक हो इसको माफ किया जा सकता है पर इस बात को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता है कि इंसान इस बात से गाफिल रहे कि उसको क्यों पैदा किया गया है? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? इस धरती पर उसको क्या करना है? उस इंसान के लिये सबसे बड़ी दुख की बात यह है कि जिस को सोचने समझने की ताक़त दी गई है वह गफलत का जीवन बिताए, जानवरों के समान खाए और आराम उठाए, और अपने अंजाम के बारे में न सोचे कि उसे क्या करना है? यहाँ तक कि अचानक उसकी मौत आ जाए, और बिना तैयारी के बुरे अन्जाम का सामना करे। इस समय अवश्य रूप से वह शर्मिन्दा होगा, लेकिन अब शर्मिन्दा होना लाभ न देगा, इस मुसीबत से निकलने के लिए प्रयास करेगा लेकिन समय निकल चुका होगा, अब कोई चीज़ फायदा न देगी।

हमेशा किया जाने वाला प्रश्न

वह प्रश्न जिस का उत्तर देने के लिए पूरब तथा पश्चिम के फलसफियों (दार्शनिकों) ने हमेशा प्रयास किया है बल्कि उसको फलसफा (दर्शन) ही नहीं माना है अगर इस विषय में बहस न की जाए और इसका उत्तर न दिया जाए कि

कहां से?

कहां तका?

मैं कहां से आया हूं?

मुझे किसने पैदा किया

हमारे आस पास जो इतनी बड़ी दुनिया है यह कहां से वजूद में आई है?

संसार जो नियम बद्ध तरीक़े से चल रहा है इसका संचालन अपने आप है इसके पीछे किसी का हाथ नहीं है।

जो लोग प्रकृति की आवाज़ सुनते तथा कबूल करते हैं वह इस बात पर ईमान रखते हैं कि इस संसार को संचालित करने वाला एक महान पालनहार है लोगों के दिल उसकी तरफ झुकते हैं उससे डरते हैं, उस पर भरोसा करते हैं, उसका आदर करते हैं उसी से मदद मांगते हैं यह ऐसी चीज़ है जिसे यह स्वभाविक रूप से अपनी आत्मा तथा दिल की गहराइयों में महसूस करते हैं। यह वही दीन है जिसके बारे में कुरआन कहता है पस तू ऐ नबी! एक तरफ़ होकर अपने आपको ख़ालिस दीन की तरफ़ लगा रख। अल्लाह की बनाई हुयी (इन्सानी) फ़ितरत जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है (इख़्तियार कर) अल्लाह की बनावट में तबदीली ठीक नहीं। यही मज़बूत तरीक़ा है (जिस पर कोई आफ़त नहीं आने की) लेकिन बहुत से लोग (इस शिक्षा को) नहीं जानते। (सूरहः रूम-३०)

कभी यह प्राकृतिक आवाज़ दिल में छुपी रहती है या ऐश व आराम की घड़ियों में उसे दबाए रखता है लेकिन जब इस पर कोई कठोर समय आता है और कोई घटना घटती है तो यह परेशानियां उसे हिला कर रख देती हैं, आस पास के लोगों से इसकी सारी आशाएँ खत्म हो जाती हैं, यहां पर यह आवाज़ अपने पालनहार की तरफ बढ़ती है उससे डरते हुए और दुआ करते हुए।

कुरआन में कई जगहों पर इसको बयान किया गया है सूरे जुमर में फरमाया ''और इंसान को कष्ट पहुंचता है तो अपने रब व पालनहार को पुकारता है और उसी की तरफ पलटता है'' (सूरहः जुमर-८)

इसी प्रकार फरमाया और जब तुम को समुद्र में कष्ट पहुंचता है (कश्ती के डूबने का भय होता है) तो तुम जिन को पुकारते थे सब गुम हो जाते हैं केवल अल्लाह बाक़ी रहता है'' (सूरे इसरा-६७)

कहता है मैं अपने अन्दर कमी के बावजूद इस बात का एहसास करता हूं, कि कोई महान शक्ति अवश्य मौजूद है, मैं इस बात पर विश्वास तथा यक़ीन रखने पर विवश हूं कि इस एहसास को एक महान शक्ति ने बेदार किया है और वह अल्लाह है।

न्यूटन कहता है इस संसार को पैदा करने वाले के बारे में तुम शक न करो, यह बात समझ से बाहर है कि संसार अचानक अपने आप वजूद में आ गया है।

संसार की आश्चर्य जनक चीज़ों, और इसके मज़बूत सिस्टम के विषय में जिस प्रकार इन्सान की मालूमात बढ़ेगी, उसी प्रकार इस संसार के बनाने वाले, उसकी हिकमत और महत्ता पर ईमान बढ़ जाएगा। एक वैज्ञानिक हरशल लिखता है जिस प्रकार ज्ञान बढ़ेगा उसी प्रकार संसार के बनाने वाले के वजूद की दलील मज़बूत होती जाएगी, जिसकी शक्ति तथा ताकत की कोई सीमा नहीं है, खगोल शास्त्रियों रसायन विज्ञान तथा गणित के माहिरों ने विज्ञान के भव्य महल का निर्माण किया है और इसे ऊंचा उठाया है, और यह वास्तव में अल्लहा की महानता और बड़ाई का महल है।

❑ ❑ ❑

शादी को आसान बनाएं

❑ असअद आज़मी

शादी विवाह इन्सानी ज़रूरत है। अल्लाह ने इस धरती पर इन्सान ही नहीं हर जानदार का जोड़ा बनाया है और दोनों के अन्दर एक दूसरे की तरफ मैलान और आकर्षण रखा है। लेकिन इन्सानी समाज को अश्लीलता और अव्यवस्था से सुरक्षित रखने के लिये मर्द और औरत के मिलाप के लिए शादी की शकल में एक नियम बनाया और नियम को अत्यंत आसान बनाया ताकि इन्सानी ज़रूरत को पूरा करने में हर इन्सान को आसानी हो। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सबसे बेहतर निकाह (शादी) वह है जो सबसे आसान तरीक़े से हो। (सुनन अबू दाऊद, अल्लामा अल्लबानी ने इसे सहीह कहा है)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक मज्लिस में मौजूद एक शख्स किसी औरत से शादी करना चाहता था लेकिन उसके पास इस औरत को महर में देने के लिये कुछ न था, अल्लाह के सन्देशवाहक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे कहा कि जाओ तलाश करो, अगर लोहे की अंगूठी भी मिल जाये तो वही ले आओ लेकिन उसके पास यह भी नहीं था। आपने उससे पूछा कि कुरआन की कुछ सूरतें याद हैं? उसने कहा हां, आपने इन ही सूरतों को महर क़रार देकर इस औरत से इसका निकाह कर दिया। (बुखारी-मुस्लिम)

सोचने की बात है कि सहाब-ए-किराम जो अल्लाह के रसूल से बहुत मुहब्बत करते थे और आप की खिदमत का अटूट जजबा रखते थे लेकिन शादी कर ली और अल्लाह के रसूल को ख़बर तक न लगी, अल्लाह के रसूल को भी मालूम हुआ तो आपने कोई शिकायत नहीं की और न ही किसी तरह की नागवारी का इज़हार किया।

इन सब वाकआत से पता चलता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में शादी विवाह के समारोह और फंकशन कितनी सादगी, और आसान तरीक़े से होते थे। इसके विपरीत आज शादी को रस्मो रिवाज, खुराफात के बन्धनों में इतना जकड़ दिया गया है और लड़की की शादी को इतना कठिन बना दिया गया है कि आम आदमी जिसके पास कई औलाद हों उनकी शादी के मामले को लेकर चिंतित रहता है दुनिया भर की रस्मों व रिवाज और ताम झाम पर होने वाले खर्च के बारे में सोच सोच कर वह परेशान रहता है कि वह इतना कैसे मैनेज कर पायेगा।

आज शादी और उससे संबन्धित समारोह और रस्मो रिवाज का असीमित सिलसिला हर संजीदा व्यक्ति के लिये चिंता का कारण बना हुआ है। मंगनी की रस्म, जहेज़, बारात, पगड़ी बंधाई, रत जगा, मुंह दिखाई, मंहगे दावत नामे, मंहगे शादी हाल या होटल, उनका डेकोरेशन, लाइटिंग, तरह तरह के खाने और डिश, वीडियो ग्राफी जैसी दर्जनों रस्मों को पूरा करने के लिये आदमी पानी की तरह पैसे बहाता है। आर्थिक एतबार से कमजोर होने के बावजूद आनावश्यक कामों को अंजाम देना ज़रूरी समझता है ताकि लोग उसे किसी से कम न समझें समाज में उसकी नाक ऊंची रहे इसके लिये

कभी कभार अपनी जायदाद बेच देता है या उसे गिरवी रख देता है, कितने लोग बैंकों से सूदी कर्ज लेते हैं लेकिन खर्च में और रस्मो रिवाज को पूरा करने में किसी तरह की कमी लाने के बारे में नहीं सोचते।

फुजूल खर्ची बहुत बड़ी लानत है जो समाज घुन की तरह चाट डालती है इसी लिये इस्लाम ने इस बारे में सख्त मोकिफ अपनाया है। क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"फुजूल खर्ची मत करो, इसलिये कि फुजूल खर्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुकरा है"। (सूरे इसरा-२६-२७)

क़्यामत के दिन जिन सवालों का जवाब दिये बगैर बन्दे को छुटकारा नहीं, उनमें से एक सवाल यह भी होगा कि माल कहां से कमाया और किन चीज़ों में इसे खर्च किया। (सुनन तिर्मिज़ी-सहीह)

गौर करने की बात यह है कि जिस समाज में असंख्य लोग ऐसे हों जिन्हें दो वक़्त की रोटी नहीं प्राप्त है उनको और उनके बाल बच्चों को तन ढाकने के लिये कपड़े नहीं, गरीबी की वजह से शैक्षणिक फीस और दूसरे खर्च सहन नहीं कर सकते, एलाज के लिये दर दर की ठोकरें खाते हैं, कितने यतीम, बेवा और बेसहारा हैं जिन्हें सर छिपाने के लिये झोंपडी भी नहीं है, कितनी समाजी, शैक्षणिक और कल्याणकारी संस्थाएं हैं जो पूंजी न होने के कारण बन्द होने को हैं। ऐसे हालात में एक शादी पर पानी की तरह पैसा बहाया जाये महज़ दिखावे, बनावटी शान व शौकत और अपनी हैसियत की संतुष्टि के लिये लाखों रूपये खर्च कर दिये जाएं, क्या शरई, अकली और समाजी किसी एतबार से इसे दुरूस्त कहा जा सकता है? हमारा यह कर्म अल्लाह के क्रोध को आमंत्रित करेगा या उसकी रहमत को? शादी के अवसर पर रिश्तेदारों और अपने करीबी लोगों को मनाने और राज़ी करने में हम लगे रहें लेकिन अपने कर्मों से अल्लाह को नाराज़ कर देना कहां की बुद्धिमानी है?

इस समाजी बीमारी का एलाज बहुत ज़रूरी है वर्ना यह खतरनाक शक्ल धारण कर लेगी इस बारे में व्यक्तगत और सामूहिक दोनों तरह तरह की कोशिश होनी चाहिए।

व्यक्तगत कोशिश में सबसे पहली बात यह है कि हर शख्स जिसके यहां शादी होने वाली हो वह फ़ुजूल रसमो रिवाज के बजाए केवल अहम कामों को करें। दावत नामा सस्ता हो, जगह और होटल कम खर्च वाला हो, वलीमा में एक पकवान पर संतोष करे, दिखावा न करे, नौजवान अपनी शादी के अवसर पर इन बातों का ख्याल रखें। सारांश यह है कि शादी को सादा बनायें।

सामूहिक कोशिश की एक अहम कड़ी यह है कि शहरों और महल्लों में समाज सुधारक कमेटी बनाएं इन कमेटियों की तरफ से जागरूकता अभियान चलाया जाए, अवामी प्रोग्राम आयोजित किये जाएं जिन लोगों के यहां शादी होने वाली हो उनसे मिल कर सुधार की अपील की जाए, बुकलेट, हैंडबिल प्रकाशित किए जाएं। सोशल मीडिया का भी इस्तेमाल किया जाए। ओलमा, खतीब हज़रात और निकाह पढ़ाने वाले हज़रात भी अपनी भूमिका निभाएं। महिलाओं में भी जागरूकता अभियान चलाया जाए। स्पष्ट रहे कि बाज़ जगहों पर इस प्रकार की कमेटियां हैं और तत्परता से काम कर रही हैं उन्हें इस सिलसिले में काफी कामयाबी मिल रही है अतः समाज के प्रभावी लोगों को आगे आना चाहिये। अल्लाह हम सबको इन सब बुराइयों से बचने की क्षमता दे।

(प्रेस विज्ञप्ति)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का सत्र सफलता पूर्वक संपन्न, देश एवं समुदाय से संबन्धित महत्वपूर्ण फैसले दाइश और आतंकवाद की कड़ी निन्दा

दिल्ली ६ अप्रैल २०१६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रेस रिलीज़ के अनुसार आज अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का एक महत्वपूर्ण सत्र मर्कज़ी जमीअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जिस में देश के अधिकांश राज्यों से आए कार्य समिति के सदस्यों और प्रादेशिक जमीअतों के पदधारियों ने शिर्कत की। सम्माननीय अमीर ने अपने संबोधन में इस्लाम के प्रचार, शिक्षा, संयम, अल्लाह से भय, एकता, सौहार्द, शिष्टाचार, राष्ट्रीय सद्भावना, इन्सान दोस्ती और इस्लाम की शिक्षाओं को देशबन्धुओं तक पहुंचाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और आतंकवाद एवं दाइश की कड़े शब्दों में निन्दा की। इस सत्र में मर्कज़ी जमीअत के महा सचिव मौलाना हारून सनाबिली ने कारकर्दगी रिपोर्ट पेश की जिसकी पुष्टि की गई और मर्कज़ी जमीअत के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ ने हिसाबात पेश किया जिस पर हाउस ने संतुष्टि एवं हर्ष व्यक्त किया। मीटिंग में जमीअत के कामों का भी अवलोकन किया गया और भविष्य में दावती, शैक्षणिक संगठनात्मक, निर्माण कार्य और कल्याणकारी योजनाओं और मानव-सेवा को गति देने के लिये गौर किया गया। इसके अतिरिक्त जमीअत की आर्थिक स्थिरता खास तौर से अहले हदीस मंज़िल के निर्माण कार्यों को पूरा करने और अहले हदीस कम्पलैक्स में निर्माणाध ीन बहुउददेशीय बिलडिंग के लिये देश स्तर पर अहले खैर हज़रात से ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग देने की अपील की गई है बाज़ सूबाई जमीअतों के चुनाव गैर दस्तूरी होने पर उन्हें निरस्त करार दिया गया और जोर दिया गया कि वह हर हाल में दस्तूर का पालन करते हुए अपने चुनाव पूरे करवाएं। पिछले दिनों पार्लियामेन्ट में मौलाना बद्रूददीन अजमल के सलफियत के बारे में आरोप और ग़लत बयानी को अफसोसनाक क़रार दिया गया और उनसे संबन्धित बयान को वादे के अनुसार पार्लियामेन्ट की कार्रवाई से ख़तम कराने पर ज़ोर दिया गया। और बदरूददीन अजमल की गलत बयानी और आरोप के खण्डन के लिये मर्कज़ी जमीअत के बरवक़्त हकीमाना व जुर्अतमन्दाना इक़दाम की प्रशंसा की गयी और जिन संगठनों

और शख्सियतों ने मौलाना बदरूददीन अजमल का फौरी तौर पर रद्द किया और उनकी निन्दा की, उनकी हक़बयानी को सराहा गया। और दीन व मिल्लत और शरीअत की दुहाई देने वाले और इसके नाम पर बुलन्द दावे करने वाले संगठनों और शख्सियात की मुज्रिमाना खमूशी पर आश्चर्य और अफसोस का इज़हार किया गया। इस मीटिंग में देश समुदाय और वैश्विक समस्याओं से संबन्धित महत्वूपर्ण करारदाद एवं प्रस्ताव पारित हुए।

कार्य समिति की करारदार में इस्लाम के अकीदए तौहीद को पूरी मानवता तक पहुंचाने और इस्लाम के बारे में फैली बदगुमानी और गलत फहमियों को दूर करने की आवश्यकता पर ज़ोर, बाबरी मस्जिद के बारे में उच्चतम न्यायलय के द्वारा प्रस्तावित मध्यस्थता कमेटी के गठन का स्वागत किया गया है। इसी तरह से जम्मू व कश्मीर के पुलवामा में आतंकी हमला की सख्त निन्दा और जां बहक होने वाले जवानों के पसमांदगान के साथ संवेदना व्यक्त किया गया और आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी इकदामात करने की अपील की गयी है। न्यूजी लैन्ड की मस्दिजों में जुमा की नमाज़ के दौरान आतंकी हमला और इस सिलसिले में वैश्विक मीडिया के दोहरे चरित्र की निन्दा और मानवीय अधिकारों के तथाकथित झण्डावाहकों से न्यूजी लैंण्ड की हुकूमत के स्टैण्ड से पाठ लेने की नसीहत की गई है। करारदाद में देश के आतंकी वाकआत, आतंकवाद और दाइश की अमानवीय गतिविधियों की कड़ी निन्दा के साथ आतंकवाद की आड़ में इस्लाम और एक खास कम्यूनिटी को आरोपित करने को सरासर अन्याय करार दिया गया है। करारदाद में अदालतों से बाइज्ज़त बरी होने वाले नौजवानों को भरपूर आर्थिक मुआवज़ा की मांग और दोषी कर्मियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और नाखुशगवार वाकआत की तहकीकात के दायरा को विस्तार देने और निष्पक्ष छानबीन करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है इसी तरह से मिल्ली मार्गदर्शकों और संगठनों के प्रमुखों से एक दूसरे पर आरोप लगाने से बचने का मश्वरा और एक दूसरे के मसलक (विचार धारा) के सम्मान की अपील की गई है। देश की पहचान राष्ट्रीय सदभावना के संरक्षण पर ज़ोर और कानून को अपने हाथ में लेने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने और सामूहिक हिंसा की रोक थाम के लिये उच्चतम न्यायालय के दिशा निर्देशों पर अमल करने की अपील की गई है। इसी तरह से रंगानाथ मिश्रा और सच्चर कमेटी की सिफारिशात को जल्द से जल्द लागू करने की मांग और अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के अल्पसंख्यक चरित्र से संबन्धित हुकूमत के मोकिफ पर चिंता व्यक्त और इसे अल्पसंख्यक विरोधी क़रार दिया गया है। इसके अलावा जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अल्पसंख्यक चरित्र से संबन्धित किसी प्रकार का कोई संशोधन और परिवर्तन न करने की अपील की गई है।

क़रारदाद में असुरक्षा, मंहगाई, बेरोज़गारी, गरीबी और निरक्षरता देश की महत्वपूर्ण समस्याएं हैं, उपर्युक्त समस्याओं को आधार बना कर मतदान अधिकार को प्रयोग करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है। बिना भेदभाव धर्म एवं समुदाय ईमानदार, साफ सुथरे और देश एवं मानवता के निमार्ण के लिये वास्तविक रोल अदा करने वाले प्रत्याशियों को चुनने का मश्वरा दिया गया। इसके अलावा सऊदी युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफि० के हिन्दुस्तान दौरे का स्वागत और आपसी समझौतों को दोनों देशों के

भविष्य के लिये सुगम करार दिया गया है राष्ट्रीपति भवन में सम्माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी के निमंत्रण पर अमीरे मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की शहजादा मुहम्मद बिन सलमान आल सऊद हफिजहुल्लाह से मुलाकात और उनके सम्मान में दिए गये रात्रि-भोज में उनकी शिर्कत और शहज़ादा मुहम्मद बिना सलमान हफिजहुल्लाह की खिदमत में अमीरे मोहतरम के द्वारा जरीदा तर्जुमान का विशेषांक जो इसी अवसर से प्रकाशित किया गया था और अरब हिन्द के प्राचीन संबन्ध और प्रिय देश से सऊदी के विभिन्न संबन्ध और सऊदी अरब की बहुमूल्य सेवाओं पर आधारित है का अंक पेश किये जाने को प्रशंसा की दृष्टि से देखा गया और इसे सराहा गया। और इस्राईल की फलस्तीन वासियों के खिलाफ आक्रामक और अत्याचारी कार्रवाइयों की निन्दा और इस पर रोक लगाने और विश्व समुदाय से फलस्तीन समस्या का ठोस समाधान निकालने की पुरजोर अपील की गई है।

बटला हाउस इनकाउन्टर और देश के अन्य हिस्सों में होने वाले तमाम इनकाउन्टरों की न्यायायिक जाँच की माँग और महिलाओं के शोषण, मंहगाई, बेरोज़गारी, घूस खोरी और पर्यावरण असंतुलन पर चिंता व्यक्त की गयी है। इसके अलावा देश एवं समुदाय की महत्वपूर्ण हस्तियों के निधन पर संवेदना व्यक्त की गई है।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। जिन सदस्यों को हार्ड कापी न मिल सके वह हमारी वेब साइट से इसलाहे समाज के हर अंक लोड कर सकते हैं इसके अलावा इसलाहे समाज की पीडीएफ फाइल अपने स्मार्ट फून पर भी मंगवाया जा सकता है। इसलिए इसलाहे समाज के सदस्यों से अनुरोध है कि वह अपना वाट्सएप नम्बर और ईमेल आई डी कार्यालय को अवश भेजें ताकि हार्ड कापी न मिलने की सूरत में उनको पीडीएफ फाइल ईमेल या स्मार्ट फून पर भेजा जा सके। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

रमज़ान के रोज़ों और इबादत की फ़ज़ीलत

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जब रमज़ान की पहली रात होती है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उसका कोई दर्वाज़ा बन्द नहीं किया जाता और नरक के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उसका कोई दर्वाज़ा खोला नहीं जाता, शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है और पुकारने वाला पुकारता है, ऐ भलाई करने वाले आगे बढ़ और ऐ बुराई करने वाले रूक जा और हर रात अल्लाह तआला लोगों को नरक से आज़ाद करते हैं। (सुनन तिर्मिज़ी ३/६६)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

रमज़ान का मुबारक महीना आ गया इस में अल्लाह तआला तुम्हें रहमत से ढांप लेगा, पाप को खतम कर देगा और दुआओं को कुबूल करेगा, अल्लाह तआला नेक कामों में जब तुम्हारे लगन और एक दूसरे से आगे बढ़ने के जज़बे को देखता है तो तुम पर अपने फरिश्तों से गर्व करता है तो तुम अल्लाह तआला को अपनी तरफ से अच्छे आमाल दिखाओ वह आदमी बहुत बद किस्मत है जो इस मुबारक महीने में अल्लाह की रहमत से वंचित (महरूम) हो जाए।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखते हुए सवाब पाने के लिये रोज़े रखे तो उसके गुज़रे हुए गुनाह मआफ हो जाएं गे और जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखते हुए सवाब के लिये रमज़ान की रातों में क़्याम करे तो उसके गुजरे हुए गुनाह मआफ हो जाएंगे इसी तरह जो लैलतुल कद्र को ईमान और सवाब की निय्यत रखते हुए इबादत करे तो उसके पिछले गुनाह मआफ कर दिये जाते हैं। (सुनन तिर्मिज़ी ३/६७)

एक हदीस कुदसी में अल्लाह तआला फरमाता हैः

आदम की औलाद के नेक कर्म का बदला दस गुना से सात सौ गुना है सिवाए रोज़े के रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसका बदला दूं गा उसने अपनी शहवत और खाना पीना मेरी खुशी के लिये छोड़ा है रोज़ेदार के लिये दो खुशियां हैं पहली खुशी इफतार करते वक़्त और दूसरी खुशी अल्लाह से मुलाक़ात के वक़्त, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क से भी ज़्यादा अच्छी है। (सुनन तिर्मिज़ी ३/१३६)

रमज़ान के महीने में रोज़ा, रात की इबादत, और दूसरे दिनों में रोज़े रखने की बड़ी फ़ज़ीलत आई है इसलिये मुसलमानों को चाहिए कि रमज़ान के महीने को गनीमत समझते हुए ज़्यादा से ज़्यादा नेक काम करें और गलत कामों से बचें। अल्लाह तआला ने जिन कामों के करने का हुक्म दिया है उसे करें खास तौर से पांच वक़्त की नमाज़ें पढ़ें इसलिये कि यह दीन का स्तंभ है और तौहीद के बाद सबसे बड़ा फरीज़ा है इसलिये हर मुसलमान और औरत पर वाजिब है कि सुकून व इतमीनान और दीनी जजबे के साथ पाँचों वक़्त की नमाज़ अदा करें। कुरआन में अल्लाह

तआला फरमात हैः

“नमाज़ काइम करो, ज़कात दो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो”। (सूरे बकरा-४३)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है : “वह मोमिन कामयाब हुए जो अपनी नमाज़ों में अल्लाह से डरते हैं” (सूरे मोमिनून १-२)

फरमायाः “और जो लोग अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करते हैं यही वह लोग हैं जो जन्नतुल फिरदौस के वारिस होंगे उसमें हमेशा हमेश रहेंगे” (सूरे मोमिनून-८-११)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

“इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है एक अल्लाह की गवाही देना, नमाज़ काइम करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना और अल्लाह के घर का हज करना”। (बुख़ारी १-४८)

रोज़ा रखने का मक़सद अल्लाह के आदेशों का पालन, उसकी हराम की हुई चीज़ों से दूर रहना, मन को हराम चीज़ों से दूर रहने का आदी बनाना। रोज़ा रखने का मकसद केवल खाने पीने को छोड़ना ही नहीं है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रोज़ा ढ़ाल है जब तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो पाप न करे और न ही शोर करे और अगर कोई गाली और झगड़ा करने पर आमादा हो तो उससे कहे कि मैं रोज़े से हूँ। (बुख़ारी ४/०१३)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने झूठ बोलने और उस पर अमल करने को नहीं छोड़ा तो अल्लाह को इस बात की ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे। (सुनन इब्ने माजा १/५३८)

कुरआन और हदीस से मालूम हुआ कि रोज़ेदार पर वाजिब है कि अल्लाह की अवैध की हुई बातों से बचे और वाजिब की हुई चीज़ों पर पूरी तरह अमल करे। जब इन्सान ऐसा करेगा तो अल्लाह तआला बखश देगा, जहन्नम से आज़ाद करेगा रोज़े और दूसरी इबादतों को कुबूल करेगा।

अल्लामा इब्ने बाज़, इब्ने उसैमीन,इब्ने जिबरीन रहमातुल्लाहि अलैहिम और अल्लजनतुद दाइमा की तहरीरों का सारांश

शेष पृष्ठ २० का

करो। दूसरी हदीस में है कि अल्लाह तअला सदका करने वाले के सदके में बढ़ोतरी ऐसे करता है जैसे तुम में से कोई शख्स अपने बछड़े का पालन पोषण करता है यहां तक कि उसका सदक़ा एक पहाड़ के समान हो जाता है।

अल्लाह की राह में खर्च करने का भायदा यह है कि इससे अल्लाह की गैबी मदद आती है, कब्र की तपिश को बुझाता है और अल्लाह की राह में खर्च करने वालों की गिनती क्यामत के दिन उन सात भाग्यशाली लोगों में से होगी जिनको अल्लाह के अर्श के छांव में जगह मिले गी इस लिये अल्लाह की राह में खर्च करने वालों को इस बात से नहीं डरना चाहिए कि उसके माल में कमी हो जाए गी या वह मोहताज हो जाएगा बल्कि उसे हदीस को सामने रखते हुए निडर हो कर अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद स०अ० ने फरमाया सदका करने से माल में कमी नहीं होती बल्कि माल में बढ़ोतरी और बर्कत होती है। अल्लाह तआला हम तआम लोगों को अल्लाह की राह में ज्यादा से ज्यादा खर्च करने की क्षमता दे।

माल के बारे में इस्लाम का दष्टिकोण

मुहम्मद अब्दुल्लाह नदवी

माल का मालिक अल्लाह हैः क्रपशन की जड़ माल की लालच है। इसी लिये इस्लाम ने माल के बारे में यह दृष्टिकोण पेश किया कि माल किसी इन्सान की निजी सम्पत्ति नहीं है बल्कि वह इन्सान के पास अल्लाह की अमानत है इन्सान अपने माल के बारे में बिलकुल आज़ाद नहीं है बल्कि अल्लहा के हुक्म का पाबन्द है इसलिये इन्सान को माल अल्लाह के निर्देशों और आदेशों के अनुसार हासिल करना चाहिए और माल को उनही जगहों पर खर्च करना चाहिए जिन जगहों पर अल्लाह ने ख़र्च करने का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''हमने जो तुम को पवित्र रोज़ी दी है उसमें से खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करते हो'' कुरआन में दूसरी जगह ''अल्लाह ने फरमाया अल्लाह ने जो माल तुम्हें दिया है उस में से ज़रूरतमन्दों को दो'' (सूरे नूर-३३)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः माल तो सबका सब अल्लाह का है।

बखीली से मना किया गया है माल व दौलत की मुहब्बत इंसान के स्वभाव में शामिल है। कुरआन ने इस बात को जगह जगह बयान किया है। अल्लाह तआला फरमाता है ''और तुम माल व दौलत से अत्यंत मुहब्बत करते हो''। (सूरे फज्र-२०)

अल्लाह तआला फरमाता है

''निसन्देह इन्सान अपने रब का बड़ा ही नाशुकरा है और वह इस बात पर खुद ही गवाह है और इसमें भी कोई शक नहीं कि वह माल की मुहब्बत में बड़ी शिददत से लिप्त है'' (सूरे आदियात)

इन्सान के इस स्वभाव का ख्याल रखते हुए इस्लाम ने माल जमा करने से कदापि मना नहीं किया है बल्कि इस माल में चन्द अधिकार तय कर दिए ताकि इन्सान के बीच बराबरी और इन्साफ काइम हो और क्रपशन को पनपूने का मौक़ा न मिल सके। इसलिये इस्लाम इस बात को पसन्द नहीं करता कि समाज के सारे माल व दौलत पर केवल कुछ लोगों का कन्ट्रोल हो जाए और बाकी लोग गरीबी की जिन्दगी गुज़ारने पर मजबूर हो जाएं इसी लिये इस्लाम माल पर कबजा जमा कर रखने वालों और ज़रूरत मन्दों पर खर्च न करने वालों को सख्त चेतावनी सुनाता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''और जो लोग सोना चांदी (माल व दौलत) जमा करके रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में उसे खर्च नहीं करते तो ऐसे लोगों को सख्त सजा सुना दीजिए, जिस दिन इस दौलत को नरक की अग्नि में तपाया जाए गा फिर इससे उन लोगों की पेशानियों और पहलू और पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) यह है वह माल जो तुम अपने लिये जमा करते थे। अब चखो इस (खज़ाना) का मज़ा जो तुम जोड़ जोड़ कर रखा करते थे'' सूरे तौबा-३४

इस्लाम दौलत मन्दों को इस बात का पाबन्द बनाता है कि वह अल्लाह के दिए हुए माल में से उन लोगों का भी हक़ रखें जिन को अल्लाह ने नहीं दिया इस्लाम इसे ज़कात का नाम देता है जो अमीरों से लेकर गरीबों पर खर्च किया जाता है।

इस्लाम यह विश्वास दिलाता है कि सदका और खैरात से माल में कोई कमी नहीं होती बल्कि गरीबों को सदक़ा खैरात देने से माल व दौलत में बढ़ोतरी होती है।

नौजवानों का संरक्षण सबकी ज़िम्मदारी

लेखकः शैख नाज़िम अल मिस्बाह **अनुवादः अब्दुल मन्नान शिकरावी**

नौजवानों के संरक्षण की जिम्मेदारी सबके कन्धों पर है वह चाहे शासक हों, या माएं, अध्यापक हों या अध्यापिकाएं क्यामत के दिन कहा जाएगा ''और उन्हें ठेहराओ इस लिये कि उनसे ज़रूरी सवाल किए जाने वाले हैं''। (सूरे साफ़्फात-२४)

हज़रत इब्ने उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ललाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम सब निगेहबान (संरक्षक) हो और सबसे उसके अधीन लोगों के बारे में पूछताछ होगी। इमाम एवं शासक निगेहबान हैं, उनसे उनकी प्रजा के बारे में सवाल हो गा। आदमी अपने घर वालों का संरक्षक है, औरत अपने पति के घर की निगेहबान है, उससे उसके मातहतों (अधीन) लोगों के बारे में पूछा जाएगा। इसी तरह से सेवक अपने स्वामी के माल का निगेहबान है, उससे उसके बारे में प्रश्न किया जाएगा। आदमी अपने बाप के माल का निगेहबान है उससे भी अपने बाप के माल के बारे में पूछताछ होगी यानी तुम में से हर एक निगेहबान है और उससे उसके मातहतों के बारे में प्रश्न होगा। (मुसनद अहमद)

क़ौम के नौजवानों को मादक पदार्थों का खतरा सबसे बड़ा और तबाहकुन है। मादक पदार्थ से न चरित्र बचता है और न ही दीन, न शारीरिक शक्ति रहती है और न ही गैरत। रिश्ते नाते दारों के अलावा कौम व मिल्लत के लिये दानवीरता का जो जज़्बा इन्सान के अन्दर होता है वह भी ख़तम हो जाता है यह इतनी बड़ा संकट है कि इंसानी मूल्य किसी में भी बाक़ी नहीं रहने देता बल्कि खतम कर देता है अतः हम पूरे समाज को देखते हैं कि वह इन संकटों को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं और यही वक़्त है कि हम में से हर एक नौजवानों को मादक पदार्थों जैसे घातक चीज़ से सुरक्षित रखने के लिये अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिये उठ खड़ा हो।

अल्लाह से दुआ है कि अध यापक और अध्यापिकाओं ने नई नस्लों के प्रशिक्षण की जो ज़िम्मेदारी ली है उसको पूरी तरह से निभाने की क्षमता दे, बच्चों को प्रशिक्षण देने में उच्च मूल्यों को पैदा करने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए, अपने क्षात्रों के इस घातक नशीले पदार्थों से बचाइये, उन्हें नशीले पदार्थों के नुकसानात के बारे में बताइये, ऐसे लेक्चर, सिम्पोज़ियम का आयोजन किया जाए और पमफलेट और आडियो वाडियो कैसेट को आम किया जाए जिस से नौजवानों के अन्दर नशीली चीज़ों के नुक्सानात के बारे में जागरूकता पैदा हो, बच्चों को खाली वक़्त के सहीह इस्तेमाल का तरीका बताया जाए अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेमतें ऐसी हैं जिनमें अधिकांश लोग कद्र नहीं करते एक तन्दुरूस्ती और दूसरे फुर्सत के अवकात (बुखारी, मुस्लिम

शिष्टाचार को बढ़ावा देने और नशीली चीज़ों से सुरक्षित रखने में मीडिया बड़ा अहम रोल अदा कर सकता है जवानों से संबन्धित ऐसे प्रोग्राम आयोजित कि जायें जो उन्हें नशीले पदार्थों से रोकें और दूर रख सकें।

जमाअती ख़बर

अम्न व इन्सानियत कांफ्रेन्स

माहद अत्तौहीद वस्सुन्नह हया घाट में १२ मार्च २०१६ को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में अम्न व इंसानियत कांफ्रेन्स आयोजित हुई। इस कांफ्रेन्स से संबोधित करते हुये मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि इस्लाम एक विश्व व्यापी धर्म है इस्लाम धर्म ने ध् ारती पर बसने वाले तमाम इन्सानों के साथ अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा दी है। इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है। अगर आज भी इस्लाम के इन्साफ, सदव्यवहार, शिष्टाचार, भाई चारा एवं समता के फलसफे (दर्शन) को मान लिया जाए और इस पर अमल किया जाए तो पूरी दुनिया इन्साफ, और अम्न व शान्ति का स्थल बन जाएगी इस अवसर पर उन्होंने आतंकवाद और दाइश की आतंकी गतिविधियों की कड़ी निन्दा की। मौलाना मुहम्मद अली मदनी ने कहा कि मुसलमानों को अपने चरित्र को दुरूस्त करना चाहिए। मौलाना खुरशीद मदनी ने मुसलमानों में फैली हुई बहुत सी गलत रस्म व रिवाज को खतम करने की ज़रूरत पर जोर दिया और कहा कि मुसलमानों को अपने अच्छे चरित्र के द्वारा इस्लामी शिक्षाओं को आम करना चाहिए। मौलाना फैसल मदनी ने कहा कि अपने बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा ज़रूर दिलवाएं मगर इस से पहले धार्मिक शिक्षा अवश्य दें। इस प्रोग्राम का संचालन मौलाना हाशिम फैज़ी सलफी ने किया। इस प्रोग्राम की शुरूआत कारी ज़िल्लुर्रहमान फारूकी की तिलावत से हुई।

एक दिवसीय समाज सुधारक कांफ्रेन्सः ४ मार्च २०१६ को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना अगसर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में एक शानदार कांफ्रेन्स सुपोल में आयोजित हुई। प्रोग्राम की शुरूआत कुरआन पाक की तिलावत से हुई। फलाहे इन्सानियत के शीर्षक से होने वाली इस कांफ्रेन्स से मौलाना कअ़्बतुल्लाह सलफी, मौलाना डा० अमानुल्लाह मदनी, मौलाना मुहम्मद अली मदनी, मौलाना अब्दुल्लाह इस्हाक नदवी, मौलाना कमालुददीन सनाबिली, मौलाना कसीमुददीन सलफी, मौलाना मन्सूर आलम सलफी, मौलाना निजामुददीन मदनी, मौलाना फीरोज आलम नदवी, मौलाना मुतीउर्रहमान सलफी, मौलाना कमरूल हुदा इस्लामी ने खिताब किया। (मुहम्मद दाऊद इस्लामी सचिव जिलई जमीअत अहले हदीस सुपोल बिहार)

वफातः जामिया सलफिया वाराणसी के अध्यापक मौलाना असरार अहमद नदवी के पिता अकबर अली उर्फ मुल्ला जी (मुहम्मद आमिर बिन महबूब अली) का १५ जनवरी २०१६ को मंगल के दिन आठ बजे रात को देहान्त हो गया। उनकी उम्र ८५ साल की थी, वह एक मिलंसार इन्सान थे। अल्लाह उनकी नेकियों को कुबूल करके जन्नतुल फिरदौस में जगह दे। **(जरीदा तर्जुमान १-१५ अप्रैल २०१६)**

अल्लाह की राह में खर्च करने का लाभ

❑ **मुहम्मद अजहर मदनी**

हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हर दिन सुबह को दो फरिश्ते उतरते हैं उनमें से एक (यह दुआ करते हुए) कहता है ऐ अल्लाह माल ख़र्च करने वाले को और ज़्यादा दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह ख़र्च न करने वाले का माल तबाह कर दे। (मुस्लिम १०१०)

कुरआन और हदीस में विभिन्न जगहों पर अल्लाह की राह में ख़र्च करने की अहमियत एवं उपयोगिता और श्रेष्ठता का उल्लेख है। इसी प्रकार माल न ख़र्च करने की सूरत में या माल को रोक कर और सैंत सैंत कर रखने या किसी भी शक्ल में माल को दबा कर रखने पर सख्त चेतावनी दी गयी है।

कुरआन ने अल्लाह की राह में ख़र्च करने को एक लाभदाक व्यवपार करार दिया है और वह भी ऐसा व्यवपार जो अल्लाह के साथ बगैर किसी वास्ते के किया जाए। बन्दे और अल्लाह के दर्मियान की जाने वाली तिजारत हानिकार हो ही नहीं सकती क्योंकि इसमें न कोई धोका है और न कोई समझौता टूटने का डर है और फायदा न मिलने का कोई भय भी नहीं है।

कुरआन ने अल्लाह की राह में ख़र्च करने को एक लाभदायक व्यवपार क़रार दिया है और वह भी ऐसा व्यवपार जो अल्लाह के साथ बगैर किसी वास्ते के किया जाए। बन्दे और अल्लाह के दर्मियान की जाने वाली तिजारत हानिकार हो ही नहीं सकती क्योंकि इसमें न कोई ध
ोका है और न समझौता टूटने का डर है और फायदा न मिलने का कोई भय भी नहीं है बल्कि लाभ ही लाभ है और माल से कई गुना लाभ है जो दुनिया के किसी बिजनस में नहीं है और न हो सकता है और न ही वक़्त का कोई क़ारून दे सकता है यह तो बन्दे और उसके स्वामी का मामला है जिसका बदला केवल वही दे सकता है जो बड़ा मेहरबान और दयालु है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''जो लोग अल्लाह की किताब कुरआन की तिलावत करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हम ने उनको दिया है उसमें से छिपे तौर पर और एलानिया खर्च करते हैं वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी भी खसारे में न होगी ताकि उनको उनकी उजरतें पूरी दे और उनको अपने फजल से और ज़्यादा दे बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला क़द्र दान है''। (सूरे फातिर २६-३०) कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह ने फरमायाः ''और तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में खर्च करोगे अल्लाह उसका पूरा पूरा बदला देगा और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है''। (सूरे सबा-३६)

एक मौक़े पर हज़रत मुहम्मद स० ने हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहो तआला अन्हो से फरमायाः बिलाल खर्च करो और अर्श वाला (अल्लाह) की तरफ से किसी कमी का भय न

शेष पृष्ठ १६ पर

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन शनिवार 15 जून से सोमवार 17 जून 2019 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 9 जून 2019 है।

नोटः- हर क्षात्र को हर महीने वज़ीफा दिया जायेगा।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव

जामिया नगर, ओखला, दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407

Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इस्लाम में नारी शिक्षा का महत्व

मुहम्मद गुफ़रान सलफ़ी

इस्लाम ने शिक्षा प्राप्त करने पर बहुत ज़ोर दिया है यही कारण है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी बनाए गये तो उनपर जो प्रथम वह्य उतरी उसमें पढ़ने का आदेश दिया गया, आपसे कहा गया ''ऐ नबी पढ़ो अपने उस रब के नाम से जिसने तुम्हें पैदा किया'' (सूरे अलक-१) इस आयत से यह पता चलता है कि इस्लाम शिक्षा के विषय में कितना गम्भीर है। यही कारण है कि संसार के अंतिम दूत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नारी एवं पुरूष को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का आदेश देते हुए कहा शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य है। (इब्ने माजा १८३ अल्लामा अलबानी ने सहीह कहा है) इस आदेश के अनुसार नबी स० ने पुरूषों के साथ महिलाओं पर भी शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया।

इस्लाम ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार ही नहीं बल्कि आदेश भी दिया है जिसका पता कुरआन के इस आयत से चलता है। अल्लहा तआला ने फरमायाः ''और जो कुछ तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और अनमोल बातें पढ़ी जाती हैं उसे याद रखो'' (सूरे अहज़ाब-३४) अगर्चे इस आयत में नबी स० की पत्नियों को इन बातों का आदेश दिया गया परन्तु यही आदेश उनके साथ-साथ समस्त मुस्लिम महिलाओं को भी है जिस प्रकार पर्दा करने का आदेश नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों के साथ समस्त मुस्लिम महिलाओं को दिया गया था अतः इस आयत से यह पता चलता है कि महिलाओं पर शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य है। इस्लाम में नारी शिक्षा का महत्व इस बात से भी प्रकट होता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सप्ताह में महिलाओं को शिक्षा देने के लिए एक दिन उनके लिये विशेष कर दिया था जैसा कि हज़रत अबू सईद खुदरी रजि० से रिवायत है कि महिलाओं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि शिक्षा के विषय में पुरूष हम से आगे हो गये, इसलिए आप हमारे लिए एक दिन निश्चित कर दीजिए अतः आपने उन्हें एक दिन तय कर दिया जिसमें उनको अच्छी अच्छी बातें सिखलाते। (बुखारी १०१)

इतना ही नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद के दिन विशेष रूप से औरतों की सभा में जा कर उनको अलग से शिक्षा देते।

चूंकि इस्लाम में नारी एवं पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं इसलिये भी उसने महिलाओं को शिक्षा दीक्षा (तरबियत) देने पर विभिन्न प्रकार से प्रेरणा दी है। आप स० फरमाते हैं कि जिसने तीन लड़कियों का पालन पोषण किया उनको सदव्यवहार सिखलाया उनके लिए अच्छा सा पति ढूंढ कर विवाह कर दिया तथा उनके साथ सदाचार किया तो उसके लिये स्वर्ग है। (अबू दाऊद) एक दूसरी हदीस में आप स० ने फरमाया कि जिस व्यक्ति के पास कोई दासी हो और वह उसको अच्छे प्रकार से अदब और सलीका (शिष्टाचार) सिखाये तथा उसे बेहतर शिक्षा दे फिर उसको गुलामी से मुक्त करके उससे विवाह कर ले तो ऐसे व्यक्ति के लिये दुगना पुण्य है। (बुखारीः९७)

सहाबा किराम, ताबईन और तबअ् ताबईन ने अपने युग में नारी शिक्षा के संबन्ध में जो प्रयास किये उसका परिणाम यह निकला कि कल तक जो औरत शिक्षा से अनभिज्ञ थी वह शिक्षा के मैदान में महत्वपूर्ण कामियाबी हासिल की। हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत सफिय्या रज़ि० उम्मे अतीया रज़ि० और हफसा बिनते

सीरीन और दूसरी सहाबियत इसकी जीती जागती उदाहरण हैं। प्रन्तु अफसोस कि बाद के युग में मुसलमान औरतों की शिक्षा के प्रति उदासीन हो गये और नारी शिक्षा को अधिक महत्व नहीं दिया जिसका परिणाम यह निकला कि मुसलमानों का पूरा समाज ही शिक्षा के मैदान में पिछड़ता चला गया। आप विचार करें कि जिस कौम और समाज की मातायें और बहनें अशिक्षित हों उसकी गोद में पलने वाली पीढ़ी का भविष्य क्या होगा जबकि हकीकत यह है कि एक मां की गोद ही पहली पाठशाला है जहां पर मनुष्य की शिक्षा दीक्षा (तरबियत) की नीव पड़ती है जिस पर उसके भविष्य का निर्माण होता है। और यह सत्य है कि जिस प्रकार नींव मज़बूत होगी उसी प्रकार इमारत भी मज़बूत होगी नारी शिक्षा के विषय में एक अंग्रेज़ चिंतक कहता है When you teach a boy, you teach a person and when you teach a girl you teach a generation.

जब आप एक लड़के को पढ़ाते हैं, तो आप एक व्यक्ति को पढ़ाते हैं और जब आप एक लड़की को पढ़ाते हैं तो आप एक पीढ़ी को सिखाते हैं। लेकिन शिक्षा के नाम पर बेपर्दगी की इस्लाम इजाज़त नहीं देता बलिक वह इस्लामी मर्यादा में रह कर शिक्षा ग्रहण करने का आदेश देता है। किसी उर्दू के कवि ने कहा कि तालीम औरतों की ज़रूरी तो है मगर खातून खाना हो वह सभा की परी न हो। अतः हमारे लिए अनिवार्य है कि हम ऐसे स्कूलों और कालेजों की संख्या बढ़ायें जहां पर हमारी बहन बेटियां सुरक्षित रह कर अनेक प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर सकें।

अल्लाह तआला से प्रार्थना है कि वह हमारे समाज को इस्लामिक नियमों के अनुसार नारी को शिक्षा देने की शक्ति दे और पश्चिमी सभयता से बचाये। आमीन।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

पूरी मानवता की भलाई

नौशाद अहमद

दुनिया में जब कोई सामान बन कर आ जाता है तो कुछ दिनों तक वह ईजाद या अविष्कार अपनी असली हालत में मौजूद होता है लेकिन कुछ ही दिनों के बाद कुछ जाल साज़ समान का नक़ली रूप तैयार करते हैं, यह वबा पूरी दुनिया में फैल चुकी हैं

जो लोग असल का नक़ल बनाते हैं, उनका मकसद यह होता है कि बिना मेहनत और मशक़्क़त के पैसा कमाएँ और रातों रात अमीर बन जायें। यह हरकत दुनिया का कोई भी व्यक्ति करे वह अपने धर्म की निगाह में अपराधी होने के साफ अपने देश के क़ानून का भी अपराधी होता है।

दुनिया मानती है कि जो हैसियत असल की होती है वह नक़ल (जाली) की नहीं हो सकती। नक़ली सामान बाज़ार में उतारने का दूसरा मक़सद यह होता है कि असल सामान की अहमियत को खत्म किया जाए लेकिन असल तो असल ही होता है।

ठीक इसी तरह का मामला धर्म का भी है। आज विश्व स्तर पर एक दूसरे धर्म को बदनाम करने का जो चलन शुरू हुआ वह अत्यंत घातक रूप लेता जा रहा है। अपराधिक कामों को दूसरे धर्म से जोड़ने का रूझहान बढ़ रहा है, इस में सबसे बड़ा मक़सद यह है कि दूसरे धर्म पर और उसके मानने वालों पर झूठे आरोप के माध्यम से बदनाम करके अपनी कमियों और अपने पापों को छिपाया जाये।

किसी भी धर्म को सहीह तरीके से जानने और समझने के लिये ज़रूरी है कि अध्ययन और स्टडी की जाए, यह रिसर्च का पहला क़दम है लेकिन आज रिसर्च की जगह झूठे प्रोपैगण्डे ने ले ली है। झूठे प्रोपैगण्डे का सहारा ले कर एक दूसरे के धर्म और उसके मानने वालों को बदनाम करने का जो सिलसिला विश्व स्तर पर शुरू हुआ है उसने गलत फहमी की भयावह शक्ल ले ली है।

इस्लाम हर प्रकार के आतंकवाद की निन्दा करता है और इस्लाम के मानने वाले दुनिया में किसी भी प्रकार की होने वाली असमाजिक गतिविधियों का कड़ा विरोध भी करते हैं लेकिन इसके बावजूद कुछ लोग अपना उल्लू सीधी करने के लिये झूठे आरोप और गलत अफवाहों का सहारा ले कर इस्लाम और उसके मानने वालों को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं जो किसी भी तरह दुरूस्त नहीं है।

एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान यह है कि वह हर खबर की गहराई और उसकी असल हक़ीक़त तक पहुंचने की कोशिश करे और किसी आरोप और झूठे प्रोपैगण्डे पर विश्वास करने के बजाय उस धर्म के असल स्रोत तक पहुंचने की कोशिश करे, ताकि जो लोग अपने नकारात्मक उददेशों को पाने के लिये अफवाह और झूठे आरोपों का सहारा लेते हैं उनका हतोत्साहन हो। क्योंकि दूसरों को बदनाम करने वाले न अपने धर्म की सेवा करते हैं और न अपने देश की बल्कि वह केवल अपने स्वार्थ की सेवा कर रहे हैं। हमें ऐसे लोगों के मनोबल को तोड़ने की ज़रूरत है और इसी में पूरी

मानवता की भलाई है।

सफलता और असफलता की बुनियाद

आज की तेज़ रफ्तार जिन्दगी ने इन्सान को काफी व्यस्त कर दिया है, भाग दौड़ में कुछ अहम काम नजरों से ओझल होते जा रहे हैं, हर इंसान यह चाहता है कि वह दुनियावी तरक्की की दौड़ में किसी से पीछे न रह जाये, यही वजह है कि वह तरक्की की मंज़िल को तय करने के लिये अत्यंत संघर्ष करता है लेकिन इन तमाम मसरूफियात के बावजूद इन्सान के ऊपर उसके पालन हार ने कुछ जिम्मेदारियां डाली हैं जिनको निभाना उसका कर्तव्य है अगर वह अल्लाह के द्वारा दी गयी इस जिम्मेदारी से मुंह मोड़ता है तो अल्लाह ने यह बता दिया है कि उसको अपनी कोताही का अंजाम भुगतना पड़ेगा।

इंसान को परिणाम से आगाह करने का मतलब यह हुआ कि अल्लाह अपने बन्दों पर दया करूणा करना चाहता है।

इन्सान का सबसे पहले अपने घर से वास्ता पड़ता है, और यहीं से उसकी जिम्मेदारी की शुरूआत होती है, बाल बच्चों की तालीम कैसी होनी चाहिये, उसे किस माहौल के मुताबिक रहना है, बाल बच्चों को किन लोगों के साथ रहना सहना है, उसे किस तरह की शिक्षा देनी है, बच्चों के जीवन की दिशा क्या होनी चाहिये, अपने पास पड़ोस के लोगों के साथ किस तरह का व्यवहार करना है, यह वह सवालात हैं जिन का संबन्ध हमारी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों से हैं, और अल्लाह के अंतिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लाहो अलैहि० वसल्लम ने इस बारे में फरमाया है तुम में से हर शख्स जिम्मेदार है और उससे उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछ ताछ होगी, हर आदमी अपने घर वालों का जिम्मेदार है और उससे भी उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछा जायेगा। (बुखारी)

अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि मैंने जिन्नों और इन्सान को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है।

हदीसे रसूल और कुरआन की इस आयत से हर इन्सान की जिम्मेदारी तै हो गयी है। घर में इस्लाम के अनुसार बच्चों की शिक्षा और अल्लाह की इबादत हर इन्सान का कर्तव्य है, इस्लामी तालीमात के मुताबिक अपने जीवन की दिशा को तय करना और उसको यक़ीनी बनाना हमारी जिम्मेदारी है। हमारी सफलता और असफलता की बुनियाद यही है। रमज़ान के महीने में हम तमाम लोगों ने अल्लाह की खूब इबादत की, लेकिन यह ध्यान रहे कि हमारी इबादत केवल रमज़ान के महीने तक सीमित न रहे बल्कि हमारी नेकी और अल्लाह की इबादत का सिलसिला पूरे साल जारी रहे इस लिये कि यह जिन्दगी हमारे लिये एक परीक्षा है जिस पर खरा उतर कर हम अपने पालन हार को राजी कर सकते हैं। अल्लाह तआला हम तमाम लोगों को नेकी के सिलसिले को बाकी रखने की क्षमता दे।

❑ ❑ ❑

पाप के बुरे प्रभाव

अल्लामा इब्ने कैइम जौज़ी

पाप के बुरे प्रभावों में से एक यह भी है कि पापी ज्ञान से वंचित हो जाता है क्योंकि ज्ञान अल्लाह का नूर है जिसे अल्लाह ने इन्सानों के दिलों में डाल दिया है, पाप इस नूर (रोशनी) को बुझा देते हैं। इमाम शाफई रजिअल्लाहो तआला अन्हो के बारे में कहा जाता है कि वह हज़रत इमाम मालिक रह० से पाठ लेने लगे तो उनकी बुद्धिमानी और अकलमन्दी ने इमाम मालिक रह० को आश्चर्य चकित कर दिया और फरमाने लगे कि मैं देख रहा हूं कि अल्लाह ने तुम्हारे दिल में नूर डाल दिया है कहीं तुम इस नूर को पाप के अंधेरे से बुझा न देना। एक अवसर पर हज़रत इमाम शाफई ने यह कविता पढ़ी। अरबी कविता का अर्थ यह है :

इमाम वक़ी के सामने मैंने अपनी स्मृति (याददाश्त) की कमजोरी की शिकायत की तो उन्होंने मुझे गुनाहों से बचने की नसीहत की और फरमाया समझ लो कि ज्ञान अल्लाह तआला का फज्ल व इनआम है और अल्लाह का फजल व इनआम नाफरमानों को नहीं मिलता।

पाप का एक बुरा असर यह भी है कि इन्सान की रोज़ी और रिज़्क में तंगी हो जाती है जैसा कि मुसनद अहमद बिन हंबल में है कि बन्दा अपने पाप की वजह से रोज़ी से वंचित हो जाता है।

तक़्वा और परहेज़गारी रोज़गार को खींच लाते हैं और तक़्वा और परहेज़गारी से दूरी गरीबी को लाती है। रोज़ी पाने और रोज़गार में बढ़ोतरी के लिये पाप को छोड़ने से बेहतर कोई चीज़ नहीं।

पाप का एक बुरा प्रभाव यह भी है कि पापी के दिल और अल्लाह के बीच एक खतरनाक नामानूसियत (अजनबीपन उदासी और दूरी) पैदा हो जाती है और यह नामानूसियत इतनी खतरनाक होती है कि अगर पापी को दुनिया की सभी नेमतें और लज्ज़तें मिल जाएं तो वह बेकार और बेमज़ा ही रहती हैं। लेकिन यह हकीकत अल्लहा का वही बन्दा महसूस कर सकता है जिसका दिल जीवित और जागरूक हो। मुर्दे को तो कोई सा भी जखम लगाया जाये उसे दुख नहीं पहुंचता अगर इस नामानूसियत से सुरिक्षित रहने के लिये पाप का छोड़ना ही लाभकारी हो तो हर अकलमन्द गुनाहों से बचने के लिये केवल यही एक सबब काफी समझ ले।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि नेकी से चेहरे पर रोशनी, दिल में नूर, रोज़ी में बढ़ोतरी बर्कत, शरीर में ताक़त, और सृष्टि के दिल में मुहब्बत पैदा हो जाती है, पाप से चेहरे पर कालापान आ जाता है, कब्र और दिल में अंधेरापन पैदा हो जाता है और शरीर में कमजोरी, रोज़ी में तंगी और सृष्टि के दिलों में नफरत पैदा हो जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय अम्न व शान्ति के तकाज़े

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

अन्तर्राष्ट्रीय सुधार और अम्न शान्ति के सिलसिले में सबसे पहली और बुनियादी बात यह है कि इस धरती पर बसने वाले तमाम इन्सानी गरोहों, जमाअतों और कौमों को उसूली एतबार से मुसावी (बरावर) माना जाए, और इस मुसावात (बराबरी और समता) को व्यवहारिक रूप देने के लिये कदापि कोई हिचकिचाहट महसूस न की जाए। अगर्चे किसी का अक़ीदा कुछ हो जो किताबे हक़ (कुरआन) रहमतुल लिलआलमीन पर नाज़िल हुई इसमें मानवीय समता का निसन्देह एलान मौजूद है। "लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारे खानदान और क़बीले बनाए ताकि तुम पहचान लिये जाओ। यक़ीनन तुम में अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इज़्जत वाला वह है जो मुत्तक़ी और परहेज़गार है खुदा दाना और वाक़िफ कार है"। (सूरे हुजुरात-१३)

तमाम इन्सान एक मर्द और एक औरत यानी आदम और हौवा की औलाद हैं। जिस तरह एक मां बाप के बच्चों में अन्तर और फर्क की कोई वजह नहीं इसी तरह तुम क्यों अन्तर काइम करते हो? वह भी ऐसे जिन के लिये कोई उचित वजह मौजूद नहीं, मिसाल के तौर पर रंग व नसल का इख्तेलाफ, दौलत व हश्मत का इख्तेलाफ, विभिन्न भौगोलिक खित्तों का इख्तेलाफ, यह तमाम इख्तेलाफात सरासर असत्य और बेअसल हैं, जिनमें उलझ कर तुम एक दूसरे के खिलाफ नफरत की दीवारें खड़ी करते हो, हालांकि तुम्हें चाहिए कि इनको नज़र अन्दाज़ करते हुए बुनियादी समता और सदभावना को ध्यान का केन्द्र बनाओ अर्थात तुम सब एक इन्सान हो।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के बाद हरम पाक में जो खुतबा दिया उनमें संबोधित वह थे जिन्होंने मुसलमानों के खिलाफ २१ वर्ष तक जुल्म व अत्याचार का कोई बड़े से बड़ा तूफान खड़ा करने में कसर नहीं उठा रखी थी लेकिन फिर भी हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया आज तुम पर कोई इलज़ाम नहीं और तुम सब आज़ाद हो।

और फरमाया ऐ कुरैश! जाहिलियत का गुरूर और नसब का घमंड खुदा ने मिटा दिया। तमाम लोग आदम की नस्ल से हैं और आदम मिटटी से बने थे फिर सूरे हुजुरात की यही चौदहवीं आयत तिलावत की जो ऊपर बयान की गयी है इससे यह और पुष्टि हो गई कि यह आयत इन्सानी वराबरी की वुनियाद है।

तमाम कौमों और गरोहों के दर्मियान एक मां बाप की औलाद होने के रिश्ते बनते जाएं। विश्व-शान्ति एक ठोस हकीक़त की शक्ल धारण कर ले।

अल्लाह के नज़दीक इन्सानों की इज़्ज़त एवं श्रेष्ठता की बुनियाद दौलत रंग, खून, नस्ल, कौम या कोई खास भौगोलिक खित्ता नहीं सिर्फ तक़वा और सत्कर्म है। हर इन्सान इस आधार पर इज्ज़त का मुस्तिहिक़ नहीं समझा जा सकता कि करोड़ पति या अरब पति है, उसका रंग गोरा है, केवल सत्कर्म ही इन्सान के सबसे अच्छे होने की बुनियाद है।**(रसूले रहमत से साभार)**

इसलाहे समाज
अप्रैल 2019 27

ISLAH-E-SAMAJ